THE INSTITUTE FOR ADVANCED STUDIES OF WORLD RELIGIONS

FILM-STRIP NO.

MBB
~~WS~~-1972-6-4

BUDDHIST SANSKRIT MANUSCRIPTS

MBB — 1972 — 6
1. Film strip number

4
2. Source

VASUNDHARĀKALPA
3. Title

4. Additional titles, shortened forms of title, etc.

= A.D.
5. Year in which MS was copied (Local & Christian Era)

6. Name of Scribe

NEPĀLI PAPER
7. Material (Palm leaf, etc.)

NEWĀRI
8. Script

22 cm. x 8 cm.
9. Size

5
10. Lines to a page

22
11. Number of leaves in complete work

1st and last pages
12. Missing leaves

×
13. Author and Date of composition (if given)

×
14. Number of Chapters

15. Remarks: The meditation of the goddess of wealth (VASUNDHARĀ)

October 15. 1972
Date photographed

वर्द्धमानजिनमा॥याससमृतस्तुविनतस्तूतनैपहद्दंदलनि॥३॥ स्वहनितंसमयंतनमोऽस्तु॥४॥ तं कल्पवृक्षसदृशीव सुधानसौ

लक्ष्मीनमामि जिनमाऽऽगतोऽहिकाया॥ नत्वाकनानत्वानिधानकास्तौ विविद्गुनत्वा प्रतिहासवर्योनत्वावना॥ नतनात्व

विविहमावर्यौ॥ नमथानधानौ॥ यानत्वपौहि मरुत्वा भवत्वाथ पक्षि॥ ध्याभवतं सहसैवनमद्वहकिं॥ हा॥नौ

विविनाकुलहुलहुषितौ श्रीमाष्योनमामि व सदृष्टि दस्पालनरक्षौ॥५॥ ॥६॥ उदवसया॥ अंतमवोक्षित्तम ॥ ॥

स्कोना न्यायीमहानगायौ विहनविस्म॥ कण्ठकर्मै ... भाद्याघिनात्वा मेमहताहि सपन्नना ...

३ श्री

मात्रे लिंकुसमतेसमन्ताकृत्लोऽ ... आवकेन संरवथे ध्वर्याधिमतो महा तले: सर्वबुद्धगुणसमन्वागतो ... भवति खलु ...

तस्यां तत्र पर्षदि गेनवपान ... पुनस्कृतः सर्वदा निर्दु ... पारि ... नाम धर्म पर्याय देशयति स्म

आदौ कल्याणं मध्ये कल्याणं पर्यवसाने कल्याणं स्वर्थं सु ... नेन केवलं परिपूर्णं परिशुद्धं पर्यवदातं ब्रह्मचर्य ...

काशयति स्म ॥ तेन खलु पुनः समयेन कोशाम्ब्यां महानगर्यां सर्वेन्द्रो नाम गृहपतिः प्रतिवसति स्म ॥ ...

सम्भ्रान्तो ... पुत्रो ... पनिज्ञान सम्पन्नः ... अन्धो ॥ तेन खलु पुनः समयेन ...

नामसंक्रान्तउपसंक्रम्य भगवतःपादौ शिरसाभिवन्दित्वा भगवन्तमनेकशतसहस्रप्रदक्षिणीकृत्यएकान्ते निषीदत्॥
एकान्ते निषण्ण सुवर्चीनाम गृहपतिर्भगवन्तमेतदवोचत्॥ पृच्छामहं भगवन्तं तथागतमर्हन्तं सम्यक्संबुद्धं कश्चिद
न प्रश्नं भवतु भगवन्नवकाशं कुर्यात॥ पृष्टप्रश्नव्याकरणाय॥ एवमुक्ते सुवर्च गृहपति। साधु गृहपति भगवता
वचने प्रतिश्रुत्य भगवन्तमेतदवोचत्॥ कथं भगवन्कुलपुत्रो वा कुलदुहिता वा दनिज्ञा लक्ष्वा सुदविज्ञो रवानः॥
... भगवन्तमेतदवोचत्॥ किं ...
... बोधिचरणवति॥ अथ खलु भगवान् ...

बं·धी ॥ईड्रगायाः॥ पनिप्रसै पूह्नी स॥ तवमूर्क मूष्णड्रगागृह पनिर्हेगवन्क्रमतदवविक॥ दनिडाहे लगवनुदनिडाहे सुगको वज्र
२ पाजावक्रपूर्णविक्रइदिरकोवक्रत्वपनिजनासेपन्न॥ तहत्वयगुमलगवानेयर्मप्रस्थार्यायनदेनिडसलो सुदनिड
रवयू॥ व्याधिवाश्रुसलोअव्याधिमोलवयू॥ वृद्धधर्माधन्यकोवकोरगोलसम्पन्नाश्रुठवयूध मतिसकिवजोवेरू
डौरवशिलापुवालआवपूपनजतसमृद्धाश्रवरवयू॥ दयुनिहिन गरहपुरदानकूदन्याश्रेरवयू॥ गृहपुशिरायो कु
दानकरविका दासीदासकर्मकनप्रसकजनसम्पन्नपनि वाना श्रेरवयू॥ तवमूर्करागवतसर्वेतापनिपूते

कैन स्तुवन्तु गृहपतिमन्तदेवा वत ॥ अस्मी गृहपतेरक पूर्वं ० तीतैश्च न्यसैरत्यय कल्पेषु यदा मान्के नकालेन न न म स्त त
नले गवान् श्रीवज्रधनसागरनिर्घोषनामन कथागतार्हत्सम्यक्संबुद्धो लोकेवावानुत्पन्न स्तथागतस्यान्तिकं मया स्त ध्व।
तैव सत्वा न न नाम भवन्ती ० त्वा व ० जुही ता आनिता। वाचिता। दिशिता। पर्यवाप्ता। अनुमोदिता। पत्र लेख वितल
हासम्यु काशिता। अह्म थानहिं तै कुल पुत्र क० भान यीन्के थ न्काचियथा भ्रसा आन ध्या ४ पत्न वन कृत पूत्रमान्त्र थातो
ह थ यन्ति। भ्रमा नृ थान विहं ० यन्ति। देवा न विहं ० यन्ति। नाम न विहं ० यन्ति। पक्वान विहं ० यन्ति। भ्र सत्वा न विहं ०

य ५
४

यक्ति।नाङ्गसानविह०यक्ति।रक्षानविह०यक्ति।भूतानविह०यक्ति।पिशाचानविह०यक्ति।कुम्भाण्डानविह०यक्ति।ब्रह्मरा
नकानविह०यक्ति।अपस्मारानविह०यक्ति।गन्धर्वानविह०यक्ति।किन्नरानविह०यक्ति।महोरगानविह०यक्ति।ग्रहे
नाबविह०यक्ति।कटपूतनानविह०यक्ति।सर्वग्रहानविह०यक्ति।।सर्वदेवानविह०यक्ति।क्षुत्पिपासानविह०यक्ति
।सर्वाकाशनानविह०यक्ति।।उर्द्धयावत्सुथ्याहाना।फलाहाना।१पत्राहाना।१त्वचाहाना।१स्कन्धाहाना।१मूलाहाना।१गं
धाहाना।१धूपाहाना।१दीपाहाना।१माल्याहाना।१आहुत्याहाना।१नविह०यक्ति।ॐआहानानविह०यक्ति।।अस्वाहाहाना।

वसाहाना ४ नकाहाना ४ मीसाहाना ४ भदाहाना ४ अम्छाहाना ४ मञ्जाहाना ४ नृधिनाहाना ४ शुकाहाना ४ ऊीविनाहानाः
सर्वेद्यविह ० यन्हि॥ नर्वं विह्लहाना ४ खस्ताहानाः सिंहालकाहाना ४ क्रदाहाना ४ क्लिच्चाहाना ४ स्यन्दनीकाहाना ४ ना
न्हाहाना ४ लक्ष्माहाना ४ उच्छिष्टाहाना ४ सुवच्छिसहानाः नाविह ० यन्हि॥ जलसाहाना ४ गरोहाना ४ सर्वहंसविह ० यन्हि
सर्नदाकिन्यानविह ० यीनि। छायानविह ० पृच्छिः आनानाविह ० यन्हि॥ मादनानाविह ० यन्हि॥ नूपाहाना ४ काछाहाना ४
गन्धाहाना ४ स्पर्शाहाना ४ प्लाद्रुस्याहाना ४ नानानात्र वाहाना ४ विष्णु पाहाना ४ अनन्तरूपाहाना ४ कामरूपाहाना ४ विवि

व ४१
ग

रूपस्तानाः४॥ वस्तुसानाः४॥ वल्याःस्तानाः४॥ अस्त्वाहानाः४॥ विविध्याक्षानाः४॥ ...वतस्याहानाः४ नविह ० यक्ति॥ याव तर्वुवना॥
लवना॥ अकनीस्त्वनाः४॥ जलवनाः४॥ सर्वानविह ० यक्ति॥ अथोमम सर्वदुष्टानां महादंष्ट्र मूर्द्धि कालाय रूँ फट् पेनो॥
प्रहनद्याय॥ ह्रूं ३ फट् वज्र समर्वदुष्टानां सर्वनक्षत्र मानय २ अथवा २ क्रम्हय २ वन्धय २ हन २ दह २ पच २ मन २
मानय २ सर्वग्रहनां नाशय २ ह्रूं ३ फट् स्वाहा॥ यस्य स्व येगृह पत्र वसधानानाम धन वी अर्द्ध स्व कुलपत्र [illegible]
लक्ष्मीहिर्वीहयगता॥ हस्तगता॥ पुस्तकगता॥ क्रीतिगता॥ पयेवाक्ता॥ मनसास पनिविक्रिता॥ धानिता वा विना॥

मा ञून माहिला । पनम ध्वविस्तृन हासंप्रकाशिताव नष्ट विष्यति ॥ तस्य कुलपुत्रस्य वा कुलदुहितुर्वा दीर्घरात्रमर्थाय हिता
य सुखाय । श्रमाय । सहितकाय । योगासंलिनानाम भविष्यति ॥ य २ श्रमो व सुधानानाम धानदीत्तथागतेन । हक
सम्यक्सं बुद्धेन उदानी कृतो कृत्वान मस्कृत्वा आर्दके म ७ ॥ सर्वं तथागतानीं सर्व श्रावका प्रत्येकबुद्धानीं स बोधिसत्वा
नीं सर्व तथागत संघस डामकृ विष्यांदेव कानींक्षे धूप सर्व पूजानि भ पूजयं ७ ॥ जृंर्द्धनां प्रतिवसुर्वा भिकस्य देवकाञ्जलि
न कप्र मृदिता क्ष वीतिसोमनसकानावावयें ७ ॥ नद क्षात्व सुखा र्से धाना यास्त्वसुमुवागाद्धनधान्यां तिन सुख्यीया भविष्यति

ख ५ स्यन्ति श्रीश्याक भायकनमस्तन ॥ श्री श्यावकुउरु स्या ॥ श्रीश्या मैधपुलु स्या ॥ श्रीश्यार्बै अवकु प्रयकु वृद्ध पुरु स्या ॥ श्रीश्याय कर

४ लाविश्रि नमः डामकु विश्यादेवका कु स्या ॥ श्रीश्याधर्मेधान कु स्या ॥ अथ नीन भानेहु उत्रयाय ॥ ॐ नमो भगवते श्री आर्यावलोके

नाये ॥ नमो रत्नत्रयाय ॥ श्री वज्रधर नमो भगवते निशाबन तथागताय अर्हते सम्यक्संबुद्धाय ॥ ॐ नमो भगवते श्री श्याय तथागता

यार्हते सम्यक्संबुद्धाय ॥ ॐ नमः सर्वतथागताय अर्हते सम्यक्संबुद्धाय ॥ नमः सर्वतथागतेभ्योऽर्हतीतानागत प्रत्युत्पन्नेभ्य

नमः सर्वतथागतेभ्यः नमो वज्रधर नमो भगवते नगरीन कस्या ॥ अथ युगशाप कस्या रडयकप्रा फस्या विधस्या दिस्य ४

ल्भक्षमनिरया॰ दानपानमिताधनिषु रुतुलालगावह्याः॥ विपत्विनस्किः समाह्नात्व हितिविनक्ष्याः॥ विश्ववत्प्रक्रयावेवक्रक्ष्न्दे
वलनव॥ कलनकमूनश्रलिप्याप्या॥ काःधमपयगुणहानपि॥ लाभक्षमिदसपवीर्य्येलाभषीयसप्ठतिह्नया॥ मथ्यकुभतथागत
स्यारुभमक्तुपदः॥ सर्वसत्वहितिनी विद्यात्निडवाधिइ॥ वयमनानुवंकोवकता॥ २०र्मवरत्थनानामथनहीविद्यानद
सोडवक्काभि॥ त[illegible]तायितस्याथमक्रुपदान्यनुस्मनामि॥ तद्यथा॥ ॐ [illegible] हूं डल्वी धनस्वर्थी मुञ्जमानक्ष्यकोज्वि
क्तितोत्पादनिमनसिसाधनी॥ मनो २०ह्मसाधनी॥ २० धनकनी॥ [illegible] ८२ [illegible] काठाभवनी [illegible] सर्ववस्तुन

त्वालीकानातन्न [illegible] धनधान्य वृद्धिकर्ति विक्रिकात्यर्सिभाहनी ॥ शुक्र स्यकोसकोस्वाभ नदाहनी ॥ बृहस्पती मकुमपत तम्ली

बुद्धरवुद्धस [illegible] ॥ [illegible] मेघसत्यै ॥ सर्वबुद्धबोधिसत्वसत्यै ॥ बोधिप्रागानसत्यै ॥ सवे अवक प्रत्येकबुद्धसत्यै खु हसं

श्री विश्वकमुस [illegible] ॥ [illegible] सत्यै ॥ लोकपालसत्यै ॥ धनव [illegible] कनी ठिनय स्वतनु मानि मर्त्यि को वजवेड्य नीरव नीलाप्रवाल

ओनतूपनेगत [illegible] नाग [illegible] नील कर्कतनस [illegible] वधं ॥ चतुरुषपर्शी वीहिस्रहस्रा [illegible] लिमाधिप लंका न्मयति ॥ [illegible]

हराबति वज्राधन सागानगम्भीनबुद्धसत्यै सत्यबाहिनि ॥ ॐ वन [illegible] विनि स्वन कूव मन ललललललैललललल [illegible]

मिमि २ मन २ समन २ विसन २ विगतम ॐ स्वाहा हूं २ भगवति वसुधा नदानपते मम सर्वसिद्धि सत्वाव गृह्ण राशकानीमना हूं हूं म

मपतिपूरय भगवति डाकिनि विद्यासर्वे बुद्धाभगवति समाजाप यन्ति स्वाहा ॥ नमस्त्रियध्विकानां सर्वतथागतानां ॥ तद्यथा ॥

नमो नवत्रयाय ॥ नमः श्री वज्रपाणये ॥ नमो वज्रक्रोधाय महादंष्ट्रोत्कटभैरवाय असिमुसलपरशुपाशहस्ताय गृह्णीकहल

य ॐ अमृतकुण्डली खखखाहि २ तिष्ठ २ बन्ध २ हन २ दह २ पच २ गर्ज २ विस्फोटय २ सर्वविघ्नविनायकान् महागणपति जीवि

तान्तकराय हूं फट् स्वाहा ॥ ॐ अमृतेनिलम्भ हूं फट् २ ॐ हूं ॐ अमृतप्रय २ ॐ ज्ञानयासि भगवति विद्याराजाय हूं फट् स्वाहा ॥

ॐ वज्रय क्ष हूँ फट् स्वाहा ॥ ॐ आह नि कं म हा व ल हूँ फट् स्वाहा ॥ ॐ आः हूँ स्वाहा ॥ ॐ आः शि खिता त प त्रं हूँ स्वाहा ॥ ॐ मा ति प श्न क्ष हूँ स्वाहा ॥
ॐ वज्रावभेद हूँ स्वाहा ॥ ॐ सर्वधर्म्मविशुद्धि ना वज्रासि [illegible] हूँ स्वाहा ॥ ॐ सर्वतथागत [illegible] ने थाभी [illegible] नं हूँ स्वाहा ॥ ॐ सर्वतथागत [illegible] दा
य स्वाहा ॥ ॐ प्रकृत स महा प्रलय [illegible] विजय स्वाहा ॥ व ल [illegible] स्वाहा ॥ ॐ न य [illegible] ॥ ॐ श्री [illegible] प स्वाहा ॥ ॐ श्री [illegible]
हा ॥ ॐ श्री दी प [illegible] प स्वाहा ॥ ॐ श्री [illegible] प स्वाहा ॥ ॐ श्री [illegible] स्वाहा ॥ ॐ श्री [illegible] स्वाहा ॥ ॐ श्री [illegible] स्वाहा ॥ ॐ श्री [illegible]
व [illegible] प स्वाहा ॥ ॐ श्री [illegible] प स्वाहा ॥ ॐ श्री [illegible] स्वाहा ॥ ॐ श्री वज्रा [illegible] स्वाहा ॥ ॐ श्री [illegible] स्वाहा ॥ ॐ श्री [illegible]

य स्वाहा ॥ ॐ श्री रुद्रमतीय स्वाहा ॥ ॐ श्री सुरुद्रमतिय स्वाहा ॥ ॐ श्री मङ्गल स्वाहा ॥ ॐ मङ्गलमती स्वाहा ॥ ॐ श्री आलय स्वाहा ॥ ॐ श्री
शालिर स्वाहा ॥ ॐ श्री अमल स्वाहा ॥ ॐ विमल स्वाहा ॥ ॐ श्री निर्मल स्वाहा ॥ ॐ श्री मलनाशनीय स्वाहा ॥ ॐ श्री अस्वल स्वाहा ॥ ॐ श्री व
लर स्वाहा ॥ ॐ श्री उग्रालिनि स्वाहा ॥ ॐ श्री उद्धनी स्वाहा ॥ ॐ श्री उद्धालपीय स्वाहा ॥ ॐ श्री प्रियकनी स्वाहा ॥ ॐ श्री प्रीतिकनी स्वाहा ॥
ॐ श्री त्रयकनि स्वाहा ॥ ॐ श्री शिवंकनी स्वाहा ॥ ॐ श्री शुद्धकनी स्वाहा ॥ ॐ श्री ग्रीकनी स्वाहा ॥ ॐ श्री कीलिकनी स्वाहा ॥ ॐ श्री ल [illegible]
नी स्वाहा ॥ ॐ श्री सत्यकनी स्वाहा ॥ ॐ श्री सत्यवनी स्वाहा ॥ ॐ श्री अनवनी स्वाहा ॥ ॐ श्री अन्यकनी स्वाहा ॥ ॐ श्री मनकनी स्वाहा ॥ ॐ श्री धन्य

श्री ९

वतीस्वाहा ॥ ॐ श्री धनेश्वर स्वाहा ॥ ॐ श्री धनस्वर्य्ये स्वाहा ॥ ॐ श्री श्रीमती स्वाहा ॥ ॐ श्री पुरावमती स्वाहा ॥ ॐ श्री नूनस्वाहा ॥ ॐ श्री सन्दूपम
लस्वाहा ॥ ॐ श्री [illegible] नमलस्वाहा ॥ ॐ श्री श्री विपुलगर्भ स्वाहा ॥ ॐ श्री अक्षैवमश्री स्वाहा ॥ ॐ श्री अक्षयकोश स्वाहा ॥ ॐ श्री धर्म्मस
म्भृप्र [illegible] स्वाहा ॥ ॐ श्री [illegible] प्रदस्वाहा ॥ ॐ श्री लब्धसम्प्रद स्वाहा ॥ ॐ श्री धनदपूजित स्वाहा ॥ ॐ श्री पूजनी स्वाहा ॥ ॐ श्री अर्च्चनीय
स्वाहा ॥ ॐ श्री अर्वे [illegible] स्वाहा ॥ ॐ श्री ब्रह्मनाक्ष स्वाहा ॥ ॐ श्री ननक्ष स्वाहा ॥ ॐ श्री विनक्ष स्वाहा ॥ ॐ श्री अनक्ष स्वाहा ॥ ॐ श्री वितक्ष स्वाहा ॥
ॐ धननक्ष स्वाहा ॥ ॐ श्री विद्वक्ष स्वाहा ॥ ॐ श्री विश्वेकनीय स्वाहा ॥ ॐ श्री विश्व [illegible] शील स्वाहा ॥ ॐ श्री विश्वनिधि स्वाहा ॥ ॐ श्री शुद्धन [illegible]

गुरु ९

मम सर्वसत्वानां [illegible] गुरु आकाशगतं वा पृथ्वीगतं वा जलगतं वा स्थलगतं वा अग्नीगतं वा स्वर्गगतं वा [illegible] पाताल[illegible] [illegible]

पातालगतं वा समुद्रगतं वा सप्तदीपगतं वा नगरगतं वा सर्वत्रगतं वा पर्वतगतं वा भूमिगतं वा [illegible]

[illegible] त्रिनाकवर्जाने [illegible] विभीला पुवालजालनूप [illegible] मम [illegible] समाजगले [illegible] जने पद्मनाग [illegible] न्द्रनीला [illegible]

[illegible] तामलाह [illegible] मलजीवादी [illegible] नकधन [illegible] वन्तुं [illegible] ह्रीं हिसरु [illegible] ममसर्वसत्वानां [illegible]

[illegible] क [illegible] स्वाहा॥ ॐ श्रीम [illegible] स्वाहा॥ [illegible] लस्वाहा॥ ॐ श्रीम [illegible] लमति स्वाहा॥ ॐ [illegible]

ब.प्र
११

स्वाहा॥ ॐ श्री सम्यक्कर्मान्ति स्वाहा॥ ॐ श्री शुद्धमति स्वाहा॥ ॐ श्री महानामि स्वाहा॥ ॐ श्री महार्थमति स्वाहा॥ ॐ श्री प्रज्ञानमति स्वाहा॥ ॐ
श्री कद्रमति स्वाहा॥ ॐ श्री जयमति स्वाहा॥ ॐ श्री विजयमति स्वाहा॥ ॐ श्री सर्वबुद्धमति स्वाहा॥ ॐ श्री गुर्विणी सुवर्णप्रभ
तनि महाकेज श्री स्वाहा॥ ॐ श्री महासाकमति स्वाहा॥ ॐ श्री सुमति स्वाहा॥ ॐ श्री सर्वतः कानन वशंकरनी स्वाहा॥ ॐ श्री तत्र इष्टनि
कनि स्वाहा॥ ॐ श्री सर्वक्लेश विनाशनी ॐ हूं स्वाहा॥ ॐ श्री आगच्छागच्छ समय मनुस्मरन स्वाहा॥ ॐ श्री हृदय मनुस्म
रन स्वाहा॥ ॐ श्री उपहृदय मनुस्मरन स्वाहा॥ ॐ श्री आवर्त्त मनुस्मरन स्वाहा॥ ॐ श्री ध्यान मनुस्मरन स्वाहा॥ ॐ श्री [illegible]

ननसनस्वाहा ॥ ॐ श्रीं ह्रां वमदस्तनस्वाहा ॥ ॐ श्रीं तिमनस्लनस्वाहा ॥ ॐ श्रीं जयमनस्तुजनस्वाहा ॥ ॐ सर्वसत्वसमाश्रमनूम

नस्वाहा ॥ ॐ श्रीं ह्रीं थगाकमननूमनस्वाहा ॥ ॐ श्रीं वसुधायस्वाहा ॥ ॐ श्रीं वसुधास्वाहा ॥ ॐ श्रीं वसुधे स्वाहा ॥ ॐ श्रीं वसुधे धेन्वीर्ये

स्वाहा ॥ ॐ श्रीं हेमकिङ्किण्यै स्वाहा ॥ ॐ श्रीं नरधान्यश्रीयै स्वाहा ॥ ॐ श्रीं लक्ष्मीयै स्वाहा ॥ ॐ श्रीं लक्ष्मी निवासिनीयै स्वाहा ॥ ॐ श्रीं महा

लक्ष्मी रत्नानिवासिनीयै स्वाहा ॥ ॐ श्रीं वसुधे स्वाहा ॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं कनी धनकनी धान्यकनी श्रीं स्वाहा ॥ ॐ श्रीं वसुधायै स्वाहा ॥

ॐ श्रीं भगवति सौम्यमसयंक श्रीमदासमयं स्वाहा ॥ ॐ श्रीं धनकनीमम श्रीं कजीयसहदिनसर्वस्वाहा ॥ ॐ श्रीं वसुधायै ०

ध. धा हृ ह्रिं लगवति भमय मनुस्मन शसिद्धिकृ भ हुं स्वाहा॥ ॐ लीलावति वस भ नाथन क्षीवन साय तर्वि धन धान्य सर्व नत्व वकालीं

१२ कान भव ब्रि ह्रिं आदि हि४ सधापकन क्लेश समृद्धि भद हि सर्व सत्वानां सा कि पुष्टि च भ सिद्धि वद दापय स्वाहा॥ ॐ श्री धन

धान्यार्यत्निप हृ स्वंन ताले कालाय सिद्धि प्रभव दुःत दिश्रीम ह्रं तलो श्री वत्स धान्य लक्ष्मी द्यो दायाय स्वाहा॥ ह्रंत्ल४ स्वाहा॥ ॐ नीं

स्वाहा॥ ॐ ह्रीं स्वाहा॥ ॐ ह्रां स्वाहा॥ ॐ ह्रः स्वाहा॥ ॐ यान पात्राय हृ ह्रः नामामि निष्पन्न त्य ज्ञानां ॐ स्यं नामसतादन्तीठ स्वत्रा ॐ

ध्यानीं सृं ह्रिं कुः लिलि मिलि २ दासि २ सुं ह्रिं ॐ स्वागच्छ २ लाव लिलि माविलि वं मनुष्य सर्व सत्त्वानां कृ मनानथपनिपूनयदं भसोवि स्व

यथादकभाजनस्थं पूरयन्ति महीं यथा तथा भानन्ति नाविधमयन्ति ॥ कर्मा सिद्धिका कर्मसिद्धिर्भवतु ॥ यथा भस्ती भीतां भुना
आप्यायन्ति सर्व्वौषधीः ॥ यथा महौषधी सर्व्वरोगप्रनाशयन्ति ॥ धनदेव वनस्पत्यै स्वेरुं ३ स्त्रावे नव धलुथो ॥ यथा वह हेम नानृ
भिनी ॥ सिद्धिविधिं यन्तु सततं मदा ॥ सर्व्वां प्रयच्छन्ते यथा कामी सिद्धिका अङ्कुरादिनि स्वाहा ॥ तद्यथा ॥ खट २ विटि २ खुटु २
घव २ मवे २ मनगुरु कर्म्पयनि २ दं हिं दरापय स्वाहा ॥ ॐ किष्किन्धस वसुधीर स्वाहा ॥ ॐ श्री वस्त्राल नधाय स्वाहा ॥ ॐ भू
न्नपानाय स्वाहा ॥ ॐ वसुनिधानाय स्वाहा ॥ ॐ वसुधान स्वाहा ॥ ॐ वसुधाधिपतये स्वाहा ॥ ॐ वसुधे स्वाहा ॥ ॐ रगा स्वाहा ॥ ॐ रत्न

ल॰ धा॰ नह स्वाहा॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा॥ ॐ प्राचिरुक्ताय स्वाहा॥ ॐ यमाय स्वाहा॥ ॐ वैश्रमणाय स्वाहा॥ ॐ विन्नकाय ॐ विरूपाक्षाय स्वा

१२ हा॥ ॐ धृतराष्ट्राय स्वाहा॥ ॐ कुवेलाय स्वाहा॥ ॐ जयाय स्वाहा॥ ॐ नैऋत्याय स्वाहा॥ ॐ वासुदेव स्वाहा॥ ॐ ईशानाधिपतये स्वा

हा॥ ॐ अनंताय स्वाहा॥ ॐ कालिकाय स्वाहा॥ ॐ वासुकीय स्वाहा॥ ॐ शंखपालाय स्वाहा॥ ॐ तक्षकाय स्वाहा॥ ॐ पद्माय स्वाहा॥ पुन॰

ॐ कर्कटनागाधिपतये स्वाहा॥ ॐ कुलगुलिन्द्राय स्वाहा॥ ॐ भूतनाधिपतये स्वाहा॥ ॐ सूर्यग्रहाधिपतये स्वाहा॥ ॐ चन्द्रा

नक्षत्राधिपतये स्वाहा॥ ॐ दिग्विलोकपालाय स्वाहा॥ ॐ विदिग्विलोकपालाय स्वाहा॥ ॐ सर्वलोकपालाय स्वाहा॥ ॐ सर्वभ १

अंमलमृत्विन्द्राय स्वाहा॥ ओं अमृतलवनेन्द्राय स्वाहा॥ ओं अमृतलजलेन्द्राय स्वाहा॥ ओं अक्षमलसर्वजलेन्द्राय स्वाहा॥ ओं अमल
जलेन्द्राय स्वाहा॥ ओं दृष्टिविषाणाय स्वाहा॥ ओं वसुधा स्वाहा॥ ओं वसुधानदीय स्वाहा॥ ओं श्रीं ह्रीं स्वाहा॥ ओं श्रीवसुधान स्वाहा॥ ओं श्रीरत्न
श्रीकरी धनकरी धान्यकरी आगच्छ आगच्छ श्रीं स्वाहा॥ ओं श्रीनादवीय स्वाहा॥ ओं श्रीवलादवीय स्वाहा॥ ओं श्रीवसुधाना ४ श्री ५
स्वाहा॥ ओं श्रीधनवती स्वाहा॥ ओं श्रीधान्यवतीय स्वाहा॥ ओं श्रीश्रीमतीय स्वाहा॥ ओं श्रीप्रभावतीय स्वाहा॥ ओं श्रीभुवनवती स्वाहा॥
ओं वसुमतीय स्वाहा॥ ओं श्रीवज्रमतीय स्वाहा॥ ओं श्रीगुणवतीय स्वाहा॥ ओं श्रीनिधिधन स्वाहा॥ ओं श्रीवसु स्वाहा॥ ओं श्रीवसु

श्री

धः मनीस्वाहा॥ॐ अम्कलगलस्त्रायस्वाहा॥ॐ भ्रूं स्वाहा॥ॐ श्रीगुरुपादुकां [illegible] यरगाष्ठस्वाहा॥ॐ श्रीधनदमहाधनदेस्वाहा॥

१ग ॐ श्रीयक्षमहायक्षकोस्वाहा॥ॐ श्री विविकुण्डलीकेलीमालिमालिनीस्वाहा॥ॐ श्री पूर्णसुतयक्षे स्वाहा॥ॐ श्री महानन्दविशार

पाक्षीस्वाहा॥ॐ स्वाहा॥ ॐ स्वाहा॥ स्वाहा॥ लं स्वाहा॥ ॐ ः स्वाहा॥ लं स्वाहा॥ ड्रां स्वाहा॥ यः स्वाहा॥ स्वाहा॥ ह्रां स्वाहा॥ ॐ

वज्रमम अ अ ः हूं वहा ः ॐ ह्रं स्वाहा॥ॐ श्री स्वाहा॥ॐ क्ष्मी स्वाहा॥ॐ प्रज्ञाश्री स्वाहा॥ॐ श्री आः स्वाहा॥ॐ व स्वाहा॥ॐ मूं हूं स्वाहा॥ॐ

आं हूं स्वाहा॥ ॐ बेषां मम सर्वं [illegible] मी सर्वं धन धान्यम् [illegible] निक्षानि दहाप यस्वाहा॥ॐ अम्कलगलस्त्रा [illegible] ॥ [illegible]

हिदरापय स्वाहा ॥ ॐ स्वाहा ॥ ॐ रुवः स्वाहा ॥ ॐ यशः स्वाहा ॥ ॐ रुद्रूवः स्वाहा ॥ ॐ दशयादिग्रूः स्वाहा ॥ उत्पादयन्कुंभकाक्तिन हेम

विहमनन्मादलु ॐ मभन्त्रपदाः सिध्यन्तु ॥ ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ हूं हूं हूं हूं हूं ॥ क्रौं ज्रौं ड्रीं ज्रां जीं ॐ ह्रूं ज्रीं ॥ रूमानागंधनश्चानर्भदेवि

हरापय स्वाहा ॥ ऐ मक्षूदय्याकृणावश्रा महापापकर्मका नि [illegible] श्यपिमन्त्रपदा सिध्यन्ति ॥ किं पुनः सिद्धाभिमूकस्यपूजूय

प्रमानेमहाहोगददति ॥ ॐ पिनीमन्ना नथपानि पूजयन्ति ॥ ॐ वज्रे ॐ वज्रापसद फट फट हूं फट स्वाहा ॥ ॐ श्री यं श्री कुनी

नकनी धान्यकनी आगच्छ आगच्छ वी स्वाहा ॥ ॐ श्रीदनिधानाय स्वाहा ॥ ॐ पद्मनिधनाय स्वाहा ॥ ॐ शुद्धो महापद्मी स्वर्णपद्म

म॰

ॐ स्वाहा॥ यान्यासर्व्वकामइहान्तकामयामि॥ तान्तानीपिबानिपतिपूनयमि॥ सिध्यकुमन्त्रपदानि॥ तद्यथा॥ ॐ नमो

त्रयाय॥ ॐ नमः देवीषन इहिहेतवसहधानवसहधनापातयस्थनेश्वननलदहिहूंकृतवरधनमेवनिनतलमदहिदहापयन

त्तसागतमहानिध्रिकोटीलतसहस्रपानिवातेज्ञहिरागवाकिवसधागप्रविश्वमममपर्नीममहागवन्तसहानिश्रनीया

तयतुनस्हूंरुरुकलामनीवामितिस्वाहा॥ श्यामागृहपोवसभानानामधानहीमन्त्रपदा॥ कृसाधोनद्धश्वपुरोव

नमागाइतिमिकोदयानेप्रुकवति॥ यस्तुकलेपृथ्वमानिवसथानानामधानहीमन्त्रपदानि॥ कथागतानामहृतोसम्य १६

यद्धा तथैव पुरुषः पूर्वसुगन्धकलनल ॥ २४ ॥ शुविमल वसुधान्तीमध्यपात नहिकानि मानि [illegible] लवनहाजो बुद्धक्षेत्रानीरः [illegible]

ष्टिकार्थ सुगन्धवापनागा हवा ॥ ३ ॥ [illegible] न कोष्ठ कोष्ठामभनवाव [illegible] ननन्द कुसुमसुमधुलि [illegible] वारणावकार ॥ श्रीमका [illegible]

लोकिका स्यन स्थलथामा नमवे प्राप्त दशमुखकवृक्ष वाधिसत्वा नामहा भूता विश्वा समन्तु दव [illegible] वाद्युना विभवसुद्धा नाभू

ओ त्वास्म समाधि नस्का भवक्षाव कालनवेदनक श्वि [illegible] त्यादरनि ता ॥ [illegible] यहवा [illegible] शुद्धयापन मम [illegible]

सनिदाना मिसान्धा नहीमक सुहा नाम् तस्का हीनात वापदैनना लखका विद्धिनैवि हिन्न मावर्ष [illegible] ॥ द्वाष्ट्येकत्येद निम

न न वा त्रलोक्य [illegible] यस्मा [illegible] पूजय [illegible] निद [illegible] माध्य [illegible] पा ० [illegible]

१८ न [illegible] स्तव [illegible] दि [illegible] सि [illegible] न [illegible] मा [illegible] व [illegible] नयाम [illegible] नमा [illegible]

त थ ना [illegible] पक [illegible] गृह [illegible] [illegible] पक [illegible] नास्य [illegible] ना [illegible]

प ता [illegible] ना [illegible] श्री [illegible] याज्ञा [illegible] यप [illegible]

य [illegible] वि [illegible] प्रकाश [illegible] ना [illegible] माय [illegible]

स्राय १ थ्रि।।।।न ष्ठ माष्ठ्रम ग व त्रि तिप्रुति ऽ ध्याल गाव त ष्ठ स्व ष्ठ्रा ना म राक्त पत्रि ले ग न्ह ना ध त्रि [illegible] द ह्य भा ना [illegible] नष्ठ

कृत्याह्र ष्ठ कुहुड र गु आम्न ना ष्ठ ध्रनु दि त ष्ठ पी [illegible] स्व ह्मा को रा [illegible] ध्वा [illegible] वल ह्म [illegible] धायु ध्या ता व्हे [illegible] ल्व

नी प्रुकि [illegible] स्य न के आम्नी म हा न गा ना। ध्रन मृ न्हु दि ष भ द ना त्व। [illegible] स्याना न त न्ना प सं क्रा न्त ड प सं ड्स्या [illegible]

प्रुलि ष्प प्रा द्रि ना।यनि पू ऽ ह्र त ल धन [illegible] न्य स न्हु ध्व न न्ह म न्हु ध्व म ह्रा [illegible] छ्रो हा भा ना। हि पूर्वि पृ [illegible] नि ह्र ष्ठु [illegible]

आम्नु ना ऽ पस ध्द्रि ष्ठ ष्ठी वि [illegible] स्व ष्ठ्रा। को ध न ह्र वा। [illegible] प नि ष्ठ। नायु स्म ना न [illegible] वि [illegible] क ष्ठी [illegible] भ न [illegible]

व॰ ध पादौ शिरसा वन्दित्वा गगनम् अभ्युद्गम्य प्रक्रान्त ॥ कोशलाव हेतुः ॥ ॥ प्रत्यया धनसम्पन्नो नाम गृहपति महाधनो महाभो
१२ गो महाकोशो विस्तीर्णधनधान्यहिरण्यः धनमेव सुवर्ण आकर ॥ ॥ श्रावास्तीनाम ॥ अद्राक्षीत् आनन्द सवन्द्रो गृहपति ॥ धन
म श्रेष्ठि ॥ कल्याणाशय धार्मिकः प्रवर्तते यथा श्रावस्त्या नाम धान्य श्रीप्रवलिता ॥ उज्जयिनीका श्रेष्ठिन वा विताप येन वा पापावृत्ति
नादिका पतनस्य च विलम्बन दारिद्र्यप्रकाशिता ॥ तेन कामानन्दत मधुरः क्रोधश्च वमा वहश्च नानाम धनदो आनन्दवत
य दर्पपत्रहृदय यथा वार्षिकपत्र्वस्य विकसन दारिद्र्यप्रकाशनक निश्चयति ॥ यह हृदयन हिताय सहृदन सुखाय ना

नुकम्पायै श्च महतो जनकायस्यार्थाय हिताय सुखाय देवानां च मनुष्याणां च यस्य गृहपते नानन्द ॰॰ र्यं वसुधनानाम
धानदी हस्कगताहं विष्यति ॥ कृतगाताश्चनिताविश्चिता ॐ तिमाजा ॥ गृहगताष्टु जितास्तुहविष्यति ॥ तस्य इति हस्तयं नर
विष्यति कथं न वितथवाक्स्यास्तर्वज्ञो बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पायै महतो जनकायस्यार्थाय हिता
य सुखाय देवानां च मनुष्याणां च नाहमानन्द धर्मस्य मनुधर्मस्य मित्र स्य कं ष्याकं समानकं ॥ स्वमलकं समुपदक्षे ने
हिकायां पृजायां ॥ स देवासनमानुषाय ॥ यन्ं मा विशोमन्येथा क निष्यति ॥ क्षतिखीमिष्यति वा ॥ नैतं स्थानं विद्यते ॥

पु भ २७

ततकस्य हेतो ॥ न ह्यानिष्ठको आनन्द वस्तु धाना नाम धानं धीम कुपदानिनं वनानि की नकुशलमूलानी कृ िप्य थ
मागमिष्यन्ति ॥ पुनवारपरं पूर्वकृतानि ष्कदयगा ॥ निधानं यिष्यति । तत्कस्य हेतोः सर्वं तथागतानीमितहार्क्ष सर्वत
थागते त्रियं तां षिका धानं ह्यो अधि ष्ठिता धानिता त्व मनुष्यामदि कश्रकापि तां पूनुं नादि गा पुना विनाप्रस्कविको ।
सैपुवह्रिताविह फाउका निष्कृतान्न नाचिता ॥ आनमाकादानि गनानतानां सर्व व्याधिपानिपी ठिकानां सर्वइ स
सलक पापड़ नानोर्थये हितायसुखाय सेलोगापतिता ॥ यस्मान्मार्षयति ॥ ॥आनन्द आह ॥ उद्गृहीतो भगवन्

२

त्रियंवसत्त्वानानामसंधानधी॥ भामिता वालिता प्रत्ययवाफलस्य नूभादिकामनसाम् पवनि विक्रिता गावसाधसत्त्वावन्ति
ति॥ अथ वलआयुष्मानानन्दउन्नद्धयासनादकामसूक्तनासेसाकृत्वा दक्षिणज्ञानं समुलीं पृथिव्यां त्रिमिस्तावार्यन्
तगावीक्तनाश्रू लिप्रसम्यक्तेन कायपूटाहत्वा॥ भगवान्क्रमेन नमवलाक्ष्य यदि दानित सविस्मयामिसमीता॥ थाम्ताव
ता॥ ॥प्रविकशोडस्मतसद्धयमस्य स्वनक्तनलसात्त्वमूढंथकावली॥ अपुनर्दमस्मिन्नात्हृष्मनुलीं॥ नमनमुली
वेत्रधानदीसदा॥ अविकृयारतावान्नूवृद्धावन्धर्मस्य विदुषा॥ अविकृथेतिप्रसन्नानानां विपाकेशापाविकृथा

थ साक्षात्नित्यसर्व्वधर्म्मिनाऽपनं धना का नगोमिरुल्लीख्रा श्री वृ कु बीनं नमा ज्ञुते ॥ ॥ अथ रवलु भूय स्थानाल न्द्रा थी
२१ ति सत्य कृतकन पूक्ष्महगावन्न भे कर वैध्य गाद कृ सो ना भक्त गार्वा कि धे वसु ऽन्नाहमम ध्यानजीप्रकर्कं कृता क्ष निका वाचि
काञ्जुर्षि वत्पान शांदि वामनसा स्तु प नि विन्दु प नत्य भुवि कन नं न्दालि सु से जुबताल चि श्यामी ॥ अथ कल्ल घ
मी भैं ल व सद्धनात्व वज्रा रल पालि र्षान्न रस्तु का ग को स्था मा मी रु न्या ॥ अथ वल सर्वबुद्धानामनुहृ पति सयवं
क्षमनकमना तलसुप्रदक्षि ला कुश्वत पनक पा रा न ल म नथ रिच घर गन्वद्धै सूतन भव लोक कुल गज का ऽ क्रियात्स्व र्द ३

श्री ... कम्बवमलिपु ... गिच्छ्यावस्तु गाहुस्व ... ना ॥ ... श्री ... [illegible]

... श्रकुनाम्र ... लासु ... [illegible] ... श्रमगु ... [illegible]

... [illegible] ... ॥ ॥ ... [illegible] ... ॥ ... [illegible] ॥

... [illegible] ... ॥ ... [illegible] ...

... [illegible] ॥ ... [illegible] ... ॥

सम्वत १८४५ ... श्रावण ... [illegible] ... ॥ ॥ शुभम् ॥ ... ॥